दिनाँक 08-03-2023, होली दिवस पर जालन्धर शहर में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

आप बताओ हम इस वक्त किस-किसको देख रहे हैं?

'सबको'।

ऐसा इसलिए क्योंकि हमारा सबके साथ, शारीरिक नहीं अपितु आत्मीयता का नाता है। जब आत्मीयता का नाता होता है तब सजन कहीं भी हो, वह नज़र में रहता है। यही नहीं घर में, बाहर, अपनों के साथ, सबके साथ विचरते हुए, उसके ख़्याल में जो चल रहा होता है वह सब कुदरत के वातावरण में रिकार्ड हो रहा होता है। इस तरह किसी के भी भावों को, सोच को जाना जा सकता है और यह कोई असम्भव बात नहीं है। यह तो कुदरती साईंस की बात है। अतैव इस द्वारे की नीति अनुसार हमने कुदरती साईंसदान बनना है।

इस सन्दर्भ में कुदरती साईंसदान बनने हेतु जानो कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में जो आत्मिकज्ञान की पढ़ाई विदित है अगर हम इसे मन-चित्त लगाकर पढ़ते, सुनते व धारण करते हैं तो हमारा मन पावनता का प्रतीक बन जाता है। अब जिसका मन पावनता का प्रतीक बन जाता है वह ब्रह्म सहित पूरे ब्रह्माण्ड की व्यवस्था को जान जाता है। इस तरह फिर कुदरत काम करती है और उसके अन्तःकरण की स्वच्छता के प्रभाववश उसे आनन्द प्रदान करने हेतु वैसा ही प्रसाद ग्रहण कराती है। यहाँ जानो कि यह प्रसाद कोई खाने की चीज़ नहीं अपितु धारण करने योग्य होता है क्योंकि यह प्रसाद सत्यज्ञान का होता है। इस ज्ञान रूपी प्रसाद को धारण करने वाला इन्सान मानसिक रूप से सत्य को पहचानने वाला होता है और इसी कारणवश कुदरत के नियम-नीति अनुसार जीवन जीने की कला इस तरह सीख जाता है कि फिर उसके अन्दर दुनियाँ से कुछ प्राप्त करने की इच्छा नहीं रह जाती यानि उसे सब मिल जाता है। इस तरह वह सबल हो जाता है और ब्रह्ममय होकर सहजता से इस जगत में निर्लिप्तता से विचरता है। ऐसा होने पर, जिस जगत उद्धार के कार्य के निमित्त ईश्वर ने उसे इस जगत में भेजा है, वह वो कार्य समर्थता से पूरा कर आत्म-विश्वास के साथ आगे बढ़ जाता है। ऐसा करते समय उसमें किंचित मात्र भी मैं भाव नहीं आता क्योंकि उसे ऐसा प्रतीत होता है कि सब काम तो कुदरत कर रही है। अन्दर से वही तो हर काम समुचित ढंग से करने हेतु ज्ञान व युक्ति बक्ष रही है। तभी तो मैं सफल

हो पा रहा हूँ। इस तरह उसे यह विश्वास हो जाता है कि मैं कुदरत रचित इस ब्रह्माण्ड में स्थिर बने रहकर, कुदरत के हुक्मानुसार सब कुछ सहर्ष करने में समर्थ हूँ यानि मैं शक्तिशाली हूँ क्योंकि कुदरत जो कि ईश्वर की शक्ति है, वह शक्ति मुझ आत्मा में भी है। आशय यह है कि वह अपने यथार्थ व क्षमता को जानने व पहचानने वाला हो जाता है। आपको भी सजनों ऐसा ही बनना है और इस हेतु आपको सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में जो कलुकाल के भाव-स्वभावों से छुटकारा पाकर, सतवस्तु में प्रवेश पाने के लिए नीति-नियमों का वर्णन है, उनको अपनाकर अपने ख़्याल को इस जगत से स्वतन्त्र करना होगा और एक विवेकशील इन्सान की तरह बुद्धिमत्ता से जीवन जीना होगा। यहाँ याद रखो यदि विवेक नहीं तो इन्सान, इन्सान कहलाने के काबिल नहीं हो सकता। ऐसा इन्सान मृतलोक में उलझकर अपने जन्म की बाज़ी हारेगा ही हारेगा यानि जन्म-मरण के चक्कर में घूमता ही रहेगा। ऐसा सजन अपने सच्चे घर पहुँच कभी भी विश्राम को नहीं पा सकेगा। सजनों आपने ऐसा नहीं बनना क्योंकि आप अजर-अमर आत्मा हो।

अब बताओ आज क्या है?

'होली है'।

आज हमने संसारी रंगों में नहीं रंगना अपितु हमें तो सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ने जो इलाही रंग ज्ञान रूप में बक्षा है, उस ज्ञान-गंगा से अपने शरीर को यानि अन्तर्घट को पावन कर लेना है। फिर जैसे ही पावनता के प्रतीक बन जाओगे, वैसे ही सच-झूठ की समझ आने लग जाएगी और पता लग जाएगा कि हमारे पावन मन में क्या चल रहा है। यह है विवेकशील इन्सान की पहचान। बस, फिर हमें कोई कुरस्ते नहीं चढ़ा सकेगा और हम सत्य पथ पर धर्म-संगत निष्काम भाव से बढ़ते चले जाएँगे। तो आज के दिन आपने ऐसा ही सुसंस्कृत मानव बनने का प्रयत्न करना है ताकि आपका हृदय सतवस्तु का प्रतीक बन जाए और आप सबको सतवस्तु में क्या होता है, वह सहजता से बता सको। यहाँ जानो कि सत्य हमारे अन्दर प्रगट रहेगा तो ही हम आत्मज्ञान से स्वयं परिचित हो सबको उसके विषय में बता सकेंगे। सो जो चाहता है कि ऐसा ही हो, वह जोर से बोलेगाः-

बोल सजन श्री शहनशाह महाबीर बजरंग बली जी की जय

बोल सजन श्री शहनशाह महाबीर बजरंग बली जी की जय

बोल सजन श्री शहनशाह महाबीर बजरंग बली जी की जय

सजनों आज खुशी का दिन है इसलिए आज परमधाम की बात आपके सामने रखी गई है ताकि आपको अपने सच्चे घर का पता लग जाए और आप स्वयं को उस घर की चाल अनुसार ढाल सको। इस सन्दर्भ में जानो कि उस सच्चे घर में जीवात्मा ने ख़्याल-ध्यान को साध कर पहुँचना है। उस सच्चे घर में विश्राम है। वहाँ एकता, एक-अवस्था का भाव यानि समभाव है। अतः जो भी कोई इस समभाव को मन में साध लेता है, वह समदृष्टि हो सकता है और फिर समभाव-समदृष्टि के सबक़ अनुसार आचार, व्यवहार, आहार, विचार अपनाता है। ऐसा होने पर उसके मन में सदा सत्य प्रकाशित रहता है और उस सजन को कोई भरमा नहीं पाता जो अपने आप में ज्ञानमय अवस्था में बने रहने का प्रतीक होता है। यहाँ जानो कि इस अवस्था को प्राप्त करना कोई कठिन नहीं अपितु यह तो अति सहज है क्योंकि इस अवस्था को प्राप्त करने की विधि हम सबको बताई जा चुकी है। आपकी जानकारी हेतु हम पुनः वह विधि बताते हैं। जानो वह विधि है - ख़्याल ध्यान वल, ध्यान प्रकाश वल। अब जब हमारा ख़्याल ध्यान वल यनि आत्म-प्रकाश में स्थित हो जाता है तो हृदय स्थित आत्म-स्वरूप ब्रह्म का ज्ञान होने लगता है। इसीलिए तो शब्द ब्रह्म यानि मूलमन्त्र आद् अक्षर को एकरस अफुरता से चलाने का विधान है। जानो यह जो तरीका सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ने हमें बक्षा है, वह अति सहज और सरल है। इस सन्दर्भ में जब हमारा ख़्याल, ध्यान आत्म-प्रकाश में यानि मूलमन्त्र ओ३म् आद् अक्षर यानि अमर आत्मा की तरफ जाता है तो जो उस प्रकाश से ध्वनित हो रहा होता है, उसकी सब समझ आने लगती है और तब आप उसे धारण करने में सक्षम हो जाते हो। इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों अपने मन की तार जो अमर आत्मा यानि ओ३म् आद् अक्षर है व प्रकाश का स्त्रोत है, उस संग जोड़ो। जानो ऐसा करने से आपका मन-मन्दिर शोभायमान यानि प्रकाशमान हो जाएगा और आत्मा में स्थित परमात्मा का दर्शन/साक्षात्कार हो जाएगा। ऐसा होने पर मन शान्त हो जाएगा और आप ब्रह्मज्ञानी बन जाओगे। फिर आपको कोई भरमा नहीं सकेगा। सो सजनों यह इतनी सहज युक्ति है, बस इस हेतु थोड़ा अपने ख़्याल को मोड़ने का यत्न करना है। माना कि पहले दिन ख़्याल थोड़ा कम जुड़ेगा, दूसरे दिन समय बढ़ेगा, तीसरे दिन और समय बढ़ेगा और इस तरह एक दिन तार ऐसे जुड़ जाएगी कि

प्रकाश से ध्वनित आवाज़ आपके ख़्याल में उतरने लगेगी। ख़्याल में उतरेगी तो विचार में चलेगी। विचार में चलेगी तो बुद्धि ग्रहण करेगी। बुद्धि ग्रहण करेगी तो सात्विकता का प्रवाह अन्दर बहने लगेगा। परिणाम-स्वरूप चित्त प्रसन्न हो जाएगा और आप सारा दिन हँसते रहोगे। आज होली वाले दिन आप इस इलाही रंग में रंग जाओ, यही हमारी शुभ कामना है।

जानो सजनों कि अमीरों के अमीर जिन शहनशाह के घर में आप बैठे हो वहाँ से आपको सब कुछ जो भी इस ब्रह्माण्ड में है, वह प्राप्त हो सकता है। इस प्राप्ति के उपरान्त आत्म-सन्तोष हो जाता है। आत्म-सन्तोष होने पर फिर बाकी कुछ भी प्राप्त करने के लिए नहीं रह जाता। यहाँ तक कि हमारे मन में सुप्त अवस्था में व्याप्त 'काम' भी फिर सिर उठाने की हिम्मत नहीं कर पाता। इसके विपरीत मन में 'काम' के जाग्रत होने पर मनुष्य का भाव ही बदल जाता है। इन्सान अच्छा सोचने की बजाए बुरा सोचने लग जाता है। एक-दूसरे को बुरी नज़र से देखने लगता है। इस तरह सम-अवस्था भंग हो जाती है। ऐसा न हो इस हेतु सजनों आत्मज्ञान से उत्पन्न आत्म-सन्तोष प्राप्त करो और मानव धर्म पर खड़े हो जाओ। जानो, मानव धर्म कहता है कि अपनी सोच, अपना बोलचाल और अपनी करनी/कर्म सत्यनिष्ठा से विचार-संगत रखो। ऐसा करने हेतु जो मानव का धर्म मानवता है, उसका अर्थ ध्यानपूर्वक समझो और फिर उसको अपने आचार-व्यवहार में ले आओ। इस तरह अधर्म का रास्ता छोड़कर निष्काम रास्ते पर सीधे चलते जाओ।

इस सन्दर्भ में सजनों समझो - मानव धर्म कहता है कि हे मानव ! जो कुछ भी सोच, बोल व कर, वह सदा सर्वहित को ध्यान में रखकर कर। आपको भी अपनी सोच, अपने बोल व अपने कर्म के विषय में सतर्क रहना है ताकि किसी विध् भी किसी का नुक्सान न हो। याद रखो यदि इस धर्म पर बने हुए हो तो ही आप सजन कहलाने के योग्य हो यानि सजनता आत्म-स्वरूप है। आपका ख़्याल व ध्यान यदि सजनता के दायरे में सध गया तो मानो आपका मन और बुद्धि प्रकाशित हो गए और आप यथार्थ रूप से मानव कहलाने के योग्य बन गए।

इस सन्दर्भ में सजनों उचित पालना-पोषणा व संसारियों की देखा-देखी के कारण जिस तरह आपका सोचने का ढंग, बोलने का ढंग और कर्म करने का ढंग बन गया है, उसमें परिवर्तन आवश्यक है। अन्य शब्दों में कलियुगी भाव-स्वभाव यथा काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार त्यागकर सचेतन अवस्था में आना जरूरी है। यह परिवर्तन निष्काम सेवा से ही आ सकता है। अतः निष्काम भाव को पकड़ो और इस की आदत इस 'द्वारे' की निष्काम सेवा से ही आरम्भ करो ताकि आपके जीवन में मंगल छा जाए। इस सन्दर्भ में समझो कि यह 'द्वारा' आपको निष्काम सेवा में ढालने हेतु आध्यात्मिक स्कूल है, जहाँ कोई फीस नहीं है। अतः इस स्कूल का लाभ उठाओ और अपना सजन रूप पहचान लो। जान लो कि अगर आपने अपना यथार्थ सजन स्वरूप पहचान लिया तो आप - 'सजन है आत्मा, श्री साजन है परमत्मा', इस सत्य को जान जाओगे। बस फिर परमात्मा की गोद में आ पूर्ण आनन्द प्राप्त कर लोगे। इसीलिए तो सजनों कहते हैंः-

ओ दाता तुहाडी गोदी दे, तुहाडी गोदी दे विच हिन सुख

तुहाडी गोदी दे लाड और प्यार, बाहिर सबना गल्लों है दुःख

ओ दाता तुहाडी गोदी दे, तुहाडी गोदी दे विच हिन सुख

अतः मानो सजनों कि आप विरलों में से भी विरले हो जो आपको यह 'द्वारा' मिला है। अब आपको आज का यह सन्देश व्यक्तिगत परिवर्तन द्वारा सब तक पहुँचाना है। अन्य शब्दों में सेवा के लिए अपने आपको समर्पित कर देना है।

अब बताओ कि आज किस-किस के अन्दर सत्य रूप से परमधाम पहुँच विश्राम प्राप्त करने की इच्छा पैदा हुई है?

'सबने हाथ खड़े किये'।

जानो परमधाम का रास्ता सजन श्री शहनशाह हनुमान जी को पूरी तरह से पता है और वह रास्ता अति सुगम, निष्कंटक व आसान है। अतः जिसने भी अपनी इच्छा पूर्ति करनी है

उसने इसी जीवन में उनके हुक्म अनुसार अपना स्वाभाविक रूप ढालने का प्रयास करना है। जो इतनी हिम्मत दिखा सकता है केवल वही सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का संग प्राप्तकर आराम से विचारयुक्त होकर निष्कंटक रास्ते पर चलता हुआ परमधाम पहुँच विश्राम को पा सकता है और आनन्द से जीवन बिता सकता है।

अब क्या जानना चाहते हो कि यह जीव और ब्रह्म का खेला कैसे चलता है?

हाँ जी'।

तो जानो रूप, रंग, रेखा रहित पारब्रह्म परमेश्वर-जीव-ब्रह्म का खेला पूरे ब्रह्माण्ड में चलता है। इस खेले की रचना परमेश्वर की कुदरती ब्रह्म शक्ति यानि ब्रह्मसत्ता से हुई है। उस सत्ता द्वारा सबसे पहले पंचभूत यथा जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी और आकाश क्रियावंत होते हैं। जानो यह पंचभूत कभी नहीं मिटते यानि हमेशा रहते हैं। इस ब्रह्माण्ड में भिन्न-भिन्न प्रकार के जीवों की रचना इन्हीं पंचभूतों द्वारा होती है। आगे जानो कि चाहे पंचभूत सदा रहते हैं पर उन द्वारा निर्मित यह चोला नाशवान है। इस चोले का नाश हो जाने पर भी यह पंचभूत पुनः अपने मूल सूक्ष्म रूप में समा जाते हैं। इस तरह यह पंचतत्त्व सदा अपने अस्तित्व में ही रहते हैं, न कभी घटते हैं और न कभी बढ़ते हैं। अब मानव इस चोले को ब्रह्मसत्ता से पूरी तरह हृष्टपुष्ट रख सके, उसके लिए ब्रह्मसत्ता को निरन्तर युक्तिसंगत ग्रहण करने का विधान है। इस सन्दर्भ में जैसे कि बोर्डों में लिखा हुआ है, ओ३म् मूलमन्त्र का अजपा-जाप करो और ब्रह्मसत्ता का ग्रहण करो। ऐसा करने से आपके अन्दर आत्मिकज्ञान का निर्मल प्रवाह प्रवाहित हो उठेगा। इसीलिए तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया हैः-

चार वेद हैन ओ हृदय, छः शास्त्र ही शरीर सार हुआ।

दयालु हैन ओ वेद प्रकाशी, प्रकाश जैंदा कुल जहान हुआ।।

चार वेद ग्रंथ है ओ हृदय, छः शास्त्र तो रोमावली हुआ।

रोम रोम विच वेद ही लिखित है, अंग अंग विच एही तो रंगावली हुआ।।

कहने का आशय यह है कि आप अन्तर्ध्यान होकर हृदय विदित यह वेद पढ़ सकते हो व उसे धारणकर एक अच्छे व नेक इन्सान बन सकते हो। यहाँ याद रखो कि जो भी इन्सान इस वृत्ति को धारण कर लेता है, उसे किसी अन्य ज्ञान की आवश्यकता ही नहीं रहती क्योंकि वह कुदरती साईंस का माहिर बन जाता है।

अब कुदरती शक्ति के आगे आप ही बताओ कि कौन टिक सकता है? इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों मूलमन्त्र आद् अक्षर को गुरु बताकर सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ने इसका युक्तिसंगत जाप करने का तरीका बक्षा। इस बात को समझते हुए आप भी अपना ख़्याल ध्यान वल व ध्यान प्रकाश वल रखो ताकि आपका हृदय प्रकाशित हो जाए और आप परिपूर्ण वेद-विदित आत्मज्ञान धारणकर ताकतवर हो जाओ। जानो ऐसा करने से आप किसी के आगे कमज़ोर नहीं पड़ोगे क्योंकि आपको अपने आत्मस्वरूप की पहचान हो जाएगी। वही आत्मस्वरूप जब सब में बाहर प्रतीत होगा तो बड़े-छोटे का, गोरे-काले का, अमीरी-गरीबी का सवाल ही खत्म हो जाएगा। इस तरह दृष्टि में सम-दर्शन ठहर जाएगा। आशय यह है कि तब हमारा संसार को देखने का नज़रिया समभाव अनुकूल हो जाएगा। तब लगेगा कि 'जो मैं हूँ यह भी वही है' अतः अब मैं इससे वैर-विरोध, छल कैसे कर सकता हूँ? इस तरह सजनभाव व्यवहार में उतर जाता है। उपरोक्त तथ्य से स्पष्ट होता है कि शारीरिक भाव नहीं अपितु आत्मा का भाव शरीर रूपी मशीनरी को चलाता है। शारीरिक भाव है - काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और आत्मा का भाव है - समभाव। समभाव अनुकूल विचरने वाला कभी भी बन्धनमान नहीं होता। वह तो सदा जगत से आज़ाद होकर एकरूपता से निष्पाप जीवन जीने के पश्चात परमधाम पहुँच विश्राम को पाता है यानि आत्म-प्रकाश बिन सूरजों प्रकाश में विलीन हो जाता है और अपने घर पहुँच विश्राम को पाता है अन्यथा क्या होता है? - सूक्ष्म मन अन्त समय जीव को लेकर उड़ जाता है और कर्मानुसार उसने जो भी कुकर्म, अधर्म किया होता है, वैसी ही सज़ा देकर नर्क में डाल देता है। ले अब भुगत। ऐसा न हो इसलिए कह रहे हैं कि समय रहते ही सुधर जाओ या खुद को सम्भाल लो। अन्त में हम तो यही कहेंगे कि अब कुदरत अपने रंग दिखा रही है और आगे दिखाने वाली है। वस्तुतः संसार की यह जो हालत है, यह इन्सान ने खुद अपनी करनी के कारण बनाई है। इस विनाश लीला से बचने का एक ही साधन है, वह है भाव-

स्वभाव परिवर्तन कर सतयुग में प्रवेश कर जाओ। सतयुग में सत्य-धर्म के दो मन्त्र होते हैं, सब ग्रन्थ शान्त हो जाते हैं। तब कुदरत अपना काम करती है। वहाँ एक ही का साम्राज्य होता है। वह कौन? - चैत्र के यज्ञ पर जो साक्षात विराजमान होते हैं - शंख, चक्र, गदा, पद्मधारी 'श्री विष्णु भगवान'। सतयुग में उन्हीं की पूजा होती है, उन्हीं की मानता होती है और कुछ नहीं होता।

तो आप भाग्यशाली हो जो इस द्वारे पर हो, जिन्हें वक्त रहते ही सब कुछ मिल रहा है। सो अपने भाग्य को समझो और युक्ति प्रवान कर सतवस्तु की आज़ादी देखने वाले श्रेष्ठ मानव बन जाओ। आपकी आज की खुशी देखकर हमें लगता है कि आपको चैत्र के यज्ञ की खुशी देखने का दिल कर रहा है। जानो इस बार चैत्र के यज्ञ पर ब्रह्म क्या है, ब्रह्माण्ड क्या है, जीव क्या है, यह सब बात होनी है। जो आप पढ़-पढ़कर भी नहीं समझ पाए, वह आप वहाँ से समझकर व स्मृति में रखकर अपने आप को ज्ञानमय अवस्था में ला सकते हो और आगे बताने के योग्य बन सकते हो। यहाँ याद रखो कि यदि आप बताई हुई युक्ति अनुसार ब्रह्ममय होकर इस जगत में विचरते हो तो आप निष्कामता से सुकर्म करोगे ही करोगे। ऐसे कर्मों का फिर कर्मफल नहीं भोगना पड़ेगा। इस तरह जन्म-मरण मिट जाएगा और आप जगत में विशेष रूप से रहते हुए भी उससे स्वतन्त्र हो जाओगे। सो अब सब ऐसा ही यत्न लड़ाना और खुशी-खुशी यज्ञ पर आना।

आप सभी ऐसा करने में कामयाब हों, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ सबको जयसीता राम जी।